159 158 154

ISSN 2582-5429 (online)

SHIVAJI COLLEGE HINGOLI

AKSHARA

Multidisciplinary Research Journa

Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal
April-June 2020 Vol.02 ISSUE. I (C)

हिंदी साहित्य में विविध विमर्श

Guest Editor

Dr.Mangala Sabadra
Principal
Smt.Padambai Kapurchandji Kotecha Mahila Mahavidyalaya, Bhusawal

Executive Editor

Dr. J.V.Dhanvij
Vice-Principal
Smt.Padambai Kapurchandji
Kotecha Mahila Mahavidyalaya, Bhusawal

Dr. Shilpa Patil
Vice-Principal
Smt.Padambai Kapurchandji
Kotecha Mahila Mahavidyalaya, Bhusawal

Associate Editor

Mr. Nilesh S. Guruchal
Smt.Padambai Kapurchandji
Kotecha Mahila Mahavidyalaya,
Bhusawal

Dr. Vijay E. So
D. N. College,Faizpu
Tal.Yawal
Dist.Jalgaon

Chief Editor : **Dr. Girish S. Koli** , AMRJ, Yawal
For Details Visit To - www.aimrj.com

Akshara Publication

PRINCIPAL
SHIVAJI COLLEGE
Hingoli Dist. Hing

ISSN 2582-5429(online)

SHIVAJI COLLEGE HINGOLI

AMRJ

Akshara Multidisciplinary Research Journal

Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal

April-June 2020 VOL.02 | ISSUE. I (C)

www.aimrj.com हिंदी साहित्य में विविध विमर्श Email ID. aimrj18@gmail.com

Index

Sr.N	...le of the...	...Name	
01	हिंदी साहित्य में नारी विमर्श	ओमप्रकाश	3-7
02	दलित नारी विमर्श : एक दृष्टिकोण	डॉ. सुरेश कानडे	8-11
03	इस्लाम और दलित व दलित मुसलमान	डॉ॰ इबरार खान	12-17
04	इक्कीसवी सदी की कविताओं में दलित विमर्श	प्रो.डॉ.मुरलीधर अच्युतराव लहाडे	18-20
05	'आल्मा कबूतरी' उपन्यास में आदिवासी जीवन	प्रा.डॉ.वनिता त्र्यंबक पवार-निकम	21-24
06	हिंदी साहित्य में आदिवासी विमर्श	वसुंधरा देसाई	25-29
07	निर्मला पुतुल की कविताओं में आदिवासी स्त्री विमर्श	डॉ. बालाजी श्रीपती भुरे	30-36
08	मणिका की कहानी में स्वछंद नारी	डॉ.घोडके अरविंद अंबादास	37-39
09	'धार' उपन्यास आदिवासी पीड़ा का दस्तावेज	प्रा.डॉ.भारती बी.वळवी	40-46
[redacted]			
11	हृषिकेश सुलाभ के नाटक में आदिवासी विमर्श	डॉ.अशोक शामराव मराठे.	50-54
12	'कितने प्रश्न करूँ' खंडकाव्य में चित्रित नारी चेतन	प्रा.नितिन विठ्ठल पाटिल	55-59
13	'दंडकारण्य' कविता : आदिवासी अस्मिताबोध	प्रा.सुपर्णा संसुद्धी	60-61
14	'पाँचवाँ स्तंभ' उपन्यास में चित्रित नारी विमर्श	डॉ.संजयकुमार शर्मा, डॉ.दिनानाथ मुरलीधर पाटील	62-65
15	कबूतरा जनजाति की त्रासदी : 'अल्मा कबूतरी'	प्रा.पोटकुले हिरा तुकाराम	66-68
16	किन्नरों की आपबीती लक्ष्मी की जबानी- ('मै लक्ष्मी...मै हिजडा'आत्मकथा के विशेष संदर्भ में)	प्रा.सौ.कविता संदीप तळेकर	69-73
17	स्त्री विमर्श का भारतीय संदर्भ एवं निर्मल वर्मा की कहानी माया दर्पण	डॉ.प्रीति सुरेंद्रकुमार सोनी	72-80
18	`विजन`उपन्यास के स्त्री पात्रों का मानसिक अंतर्द्वंद्व	डॉ.संगीता सूर्यकांत चित्रकोटी	81-84
19	साहित्य एवं नारी विमर्श	संगीता राव	85-87
20	समकालीन हिंदी कहानी में दलित चेतना	प्रा.रज्जाक शेख	88-90
21	दलित साहित्य की अवधारणा	प्रा.पाटोले अनीता किसन	91-93
22	स्त्री चेतना का उपन्यास – `मुझे चाँद चाहिए`	प्रा.डॉ.पूनम त्रिवेदी	93-96

©Copyright 2020 *AMRJ*. All Rights Reserved

ISSN 2582-5429(online)

Akshara Multidisciplinary Research Journal

Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal

April-June 2020 VOL.02 | ISSUE. I (C)

www.aimrj.com हिंदी साहित्य में विविध विमर्श Email ID. aimrj18@gmail.com

दलित साहित्य में स्त्री विमर्श

[redacted]

हिन्दी विभागाध्यक्ष, शिवाजी महाविद्यालय, हिंगोली महाराष्ट्र

भ्रमणध्वनि–9850203878 ई–मेल wagh.sudhir 001@gmail.com

शोध सार–दलित साहित्य न केवल वर्ण व जाति–व्यवस्था से मुक्ति का साहित्य है, अपितु यह सामाजिक समानता, स्वतंत्रता, मानवीयता एवं विश्वबन्धुता को प्रतिप्रस्थापित करने का साहित्य है। इसलिए इसे परम्परागत साहित्यिक मानदण्डो पर नहीं कसा जा सकता।

मुख्य शब्द– वर्ण, जाति व्यवस्था, अन्धविश्वास, अन्याय एवं शोषण।

दलित साहित्य वर्ण, जाति व्यवस्था से मुक्ति, वैज्ञानिक सोच व संवेदनशील का साहित्यिक हस्तक्षेप है, जो अन्धविश्वासों, अन्याय एवं शोषन के विरुध्द होकर मनुष्य को पूर्वाग्रहों से मुक्त करता है। वस्तुतः वह प्रतिशोध का साहित्य है। दलित साहित्य न केवल वर्ण व जाति–व्यवस्था से मुक्ति का साहित्य है, अपितु यह सामाजिक समानता, स्वतंत्रता, मानवीयता एवं विश्वबन्धुता को प्रतिप्रस्थापित करने का साहित्य है। इसलिए इसे परम्परागत साहित्यिक मानदण्डो पर नहीं कसा जा सकता।

भारतीय साहित्य में एक नई और महत्वपूर्ण धारा का विकास दलित साहित्य के उत्थान के साथ होता है। देश की लगभग सभी बड़ी भाषाओं में दलित साहित्य लिखा जा रहा है, जिसकी अपनी अलग और खास विशेषताएं हैं। हिंदी में भी गंभीर दलित साहित्य लेखन हो रहा है। यह धारा स्वानुभूति की धारा है। सहानुभूति की नहीं। इस धारा ने हिंदी कविता को भी नए स्वर में समृद्व किया है। राजेन्द्र यादव और ओमप्रकाश वाल्मिकि जैसे विद्वान यह स्विकार करते है कि "दलित साहित्य ही भविष्य का साहित्य है।"[1] दलित कविताएं लिखकर हिंदी साहित्य को अनुभव से लगातार कर रहे हैं। इनमें ओमप्रकाश वाल्मीकि, मोहनदास नैमिशराय, जयप्रकाश कर्दम, कुसुम वियोगी, डॉ एन. सिंह, मलखान सिंह, दया बटोही, श्यौराज सिंह 'बेचैन', ईस कुमार गंगनिया, कैलाश दहिया, अनीता भारती, रजनी तिलक, तेजपाल सिंह तेज, रजनी अनुरागी, कौशल पवार, रजनी दिसोदिया, मुसाफिर बैठा, सूरजपाल चौहान, मुकेश मानस, जयप्रकाश लीलावान, प्रेमचंद गांधी, बलबीर माधोपुरी, सुशीला टाकभैरे, रजत रानी 'मिनु', कंवल भारती और सुदेश तनवर आदि प्रमुख हैं। इन कवी–कवियत्रियों के कई कविता संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं और इनमें से अधिकांश लगातार कविता कर्म कर रहें है। इन सब की कविताओं में कहीं कुछ मिला जुला तो कहीं काफी भिन्न स्वर भी देखने को मिलते हैं। प्रसिध्द समिक्षक डॉ. एन. सिंह के अनुसार "हमारी दृष्टि में दलित साहित्य दलित लेखकों द्वारा लिखित वह साहित्य है जो सामाजिक, धर्मिक और मानसिक रुप से उत्पिडित लोगों की बेहतरी के लिए लिखा गया हो। जो सच्चे अनुभवों पर आधरित हो और जीवंत भाषा में लिखा गया हो।"[2]

भारत की स्त्री संबंधी अध्ययन लंबे समय तक पुरुषों द्वारा ही किए गए हैं। आज भी स्थिती ऐसी ही है लेकिन स्वर्ण समाज की स्त्री अपनी सामाजिक स्थिति का आकलन आज खुद करने लगी है। दलित स्त्री का बहुत छोटा हिस्सा सामने आया है जो अपनी सामाजिक स्थिति का खुद आकलन कर रहा है। विमर्श शब्द हमारी भाषा में पहले से मौजुद है पर स्त्री विमर्श

©Copyright 2020 *AMRJ*. All Rights Reserved

PRINCIPAL
SHIVAJI COLLEGE
Hingoli Dist. Hingoli

ISSN 2582-5429(online)
Akshara Multidisciplinary Research Journal
Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal
April-June 2020 VOL.02 | ISSUE. I (C)
www.aimrj.com हिंदी साहित्य में विविध विमर्श Email ID. aimrj18@gmail.com

आज "वुमेन डिस्कोर्स' के पर्याय रुप में लिया जा रहा है। डिस्कोर्स का अर्थ अभिव्यक्ति बोलना या अपनी बात दूसरों तक सम्प्रेषित करना, जीवन जीने का एक सार्थक तरीका है।"[3]

वैसे तुलनात्मक रूप से देखा जाए तो मुख्यधारा के हिंदी साहित्य में स्त्रीवादी स्वर काफी समय बाद प्रबल हुआ है, जबकि दलित साहित्य में साथ ही हुआ है। आज दलित स्त्री अपने आपको किसी दलित पुरुष के साथ खुद अपनी नजर से देखने लगी है। रजनी अनुरागी लिखती हैं–मैं वैसी नहीं हूँ / जैसी तुम मुझे देखते हो / मैं वैसी हूँ / जैसी मैं खुद को देखती हूँ /तुम देख नहीं सकते मुझको / मेरी ही तरह/ यह दलित स्त्री खुद को कैसे देखती है? रजनी तिलक 'औरत–औरत में अंतर' है कविता में इस स्त्री दृष्टि का परिचय देती है– "औरत–औरत होने में/जुद–जुदा फर्क क्या है ?/ एक भंगी तो दूसरी बमणी/एक डोम तो दूसरी ठकुरानी/दोनों सुबह से शाम खटकती है/ बेशक एक दिन भर खेत में/ दूसरी घर की चारदीवारी में/शाम को एक सोती है बिस्तर पे /तो दूसरी कांटो पर..../एक सताई जाती है स्त्री होने के कारण/दूसरी सताई जाती है स्त्री और दलित होने पर/एक तड़पती है सम्मान के लिए/दूसरी तरफ है भूख और अपमान से।"

रजनी तिलक की दलित स्त्री कहती है कि वह ऊंची जाति की तुलना में शोषण की अधिक शिकार है। वह दलित पुरुषवादी की और ऊंची जाति के पुरुषों के शोषण का भी शिकार है। इस तरह वह दोहरे शोषण का शिकार है लेकिन यह सवर्ण स्त्री की तरह ना तो शोषण से समझौता कर रही है और न ही इससे किसी प्रकार के अवसाद में डूब रही है। वह इसका मुकाबला कर रही है। वह अपनी मां से साफ कहती है कि वह पुरुषवादी और जातिवादी शोषण को झेलने को तैयार नहीं है और मां को भी चाहिए कि वह अपनी आधुनिक बेटी को अत्याचारों को सहन करने का पाठ न पढ़ाएं। पूनम तुषामड लिखती हैं–

"झाडू, तसली और
कूड़े की विरासत
मां मुझे मत दो।
मुझको पढ़ना आगे बढ़ना
खुद को नए सांचे में गढना
और सब को है जगाना
मांग कर खाने की आदत
और नसीहत
मां मुझे मत दो।

दलित महिलाओं में एक स्त्री स्वर ऐसा है जो हर पुरुष में एक दरिन्दा देखता है और अपनी समस्याओं से निजात प्रेम विवाह में ही देखता है। अनीता भारती की कविताओं में यह सब प्रमुखता से देखने को मिलता है। कुछेक दलित कवित्रीयों को छोड़, बाकी की स्त्री स्वर पुरूषों के प्रति इस तरह की नफरत में भरा नहीं है। ये कवियत्रिया अपनी बस्ती से भागना नहीं चाहती हैं, उसे बेहतर बनाना चाहती हैं। समाज के भीतर रहकर वह देखती हैं कि दलित पुरुष का बड़ा हिस्सा मेहनती है और स्त्री के प्रति समता के भाव से भरा है। रजत रानी 'मीनू' अपनी कविता 'पिता भी होते हैं मां' में बताती है कि दलित पुरुष महिलाओं के उत्थान में सहायक है–

मैं उत्तीर्ण होती थी।
पापा को लगता था
कि वह पास हो गए हैं परीक्षा में

©Copyright 2020 AMRJ. All Rights Reserved

SHIVAJI COLLEGE HINGOLI AMRJ
PRINCIPAL
SHIVAJI COLLEGE
Hingoli Dist. Hingoli

ISSN 2582-5429(online)
Akshara Multidisciplinary Research Journal
Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal
April-June 2020 VOL.02 | ISSUE. I (C)
www.aimrj.com हिंदी साहित्य में विविध विमर्श Email ID. aimrj18@gmail.com

बांटते देखें मिठाई
मनाते थे खुशियां
उनकी आंखों में चमकता है
मां जैसा प्यार।"

दलित स्त्री अपनी पुरुषों से पिंड छुड़ाकर या उससे नफरत करकअपनी मुक्ति के सपने नहीं देखती है। वह अपने संघर्षशील समाज में रहकर उसे बेहतर बनाना चाहती हैं। वह स्त्री से क्षमता वाले इस के सामाजिक मूल्यों को अपनी कविता की प्रेरणा बना रही है। यही वजह है कि इसका स्वर सवर्ण स्त्री विमर्श से अलग ढंग का विकसित हो रहा है।

अन्ततः कहा जा सकता है कि यह धारा स्वानुभूति की धारा है। सहानुभूति की नहीं। इस धारा ने हिंदी कविता को भी नए स्वर में समृद्व किया है। दलित साहित्य वर्ण, जाति व्यवस्था से मुक्ति, वैज्ञानिक सोच व संवेदनशील का साहित्यिक हस्तक्षेप है, जो अन्धविश्वासों, अन्याय एवं शोषन के विरुध्द होकर मनुष्य को पूर्वाग्रहों से मुक्त करता है।

संदर्भ :

1. दलित साहित्य का सौंदर्य शास्त्र, वाल्मिकी ओमप्रकाश, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ. 21
2. अंतिम दो दशकों का हिन्दी साहित्य, सं. गौतम मीरा, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ. 111
3. , नया ज्ञानोदय पत्रीका (स्त्री–विमर्श दशा–दिशा), मीरा सीकरी अंक 29 जुलाई 2005 पृ. 41

T.C.
...ege,Hingoli.
Tq.& Dist.Hingoli.(MS.)

©Copyright 2020 *AMRJ*. All Rights Reserved

PRINCIPAL
SHIVAJI COLLEGE
Hingoli Dist. Hingoli